ISSN 2395-051X

पारिवारिक संबंधों का मनोसामाजिक विश्लेषण

(बालक-अभिभावक संबंधो के विशेष संदर्भ मे)

डॉ. रश्मि दुबे

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष - समाजशास्त्र

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर, उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

बालक का अपने अभिभावकों के साथ गहरा संबंध होता है। वे एक-दूसरे से अन्तःसंबंधित होते हैं तथा एक-दूसरे पर निर्भर रहते है। इन संबंधों की जड़ें इतनी गहरी होती है, जितना कि सागर की गहराई भी नहीं होती। इतना ही नहीं, संबंध भावनात्मक होते हैं। पुत्र-पुत्री का अपने माता-पिता व अभिभावकों के साथ संबंध, बालक अभिभावक संबंध कहलाता है वहीं इनका संबंध परिवार के दूसरे सदस्यों जैसे- भाई-बहनों, चाचा-चाची, दादा-दादी, भैया-भाभी, बुआ, मौसा-मौसी आदि के साथ होता है तो यह संबंध बालक पारिवारिक संबंध कहलाता है। बालक का सुन्दर ढंग से चहुंमुखी व्यक्तित्व विकास हो इसके लिए बालक-अभिभावक संबंधों का सुमधुर, आनंददायी एवं प्रसन्नतापूर्ण होना आवश्यक है।

मुख्य शब्द - पारिवारिक-संबंध, बालक-अभिभावक, अन्तरपीढ़ी संघर्ष।

शिशु जब जन्म लेता है, तब न तो वह सामाजिक होता है और न ही असामाजिक। वह तो नितांत असहाय दशा में होता है जिसका लालन-पालन, देखरेख, सेवा-सुश्रुषा का भार माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों पर होता है। इस समय यदि शिशु को यों ही छोड़ दिया जाए तो निश्चित ही उसकी मृत्यु हो जाती है और वह सदा-सदा के लिए मृत्यु की गोद मे समा जाता है। परन्तु जब नवजात शिशु की अच्छी परवरिश की जाती है, ठीक ढंग से लालन-पालन किया जाता है, चिकित्सा सेवायें उपलब्ध करवायीं जाती, तब वही शिशु शनैः शनैः वढ़कर किशोर व युवा वनता है तथा माता-पिता के कार्यो में सहयोग देने लगता है। उसके भीतर मान्यता प्राप्त व्यवहारों का विकास होने लगता है, जिससे वह सामाजिक प्राणी बनता है। सुन्दर गुणों से विभूपित होकर वह देश का कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनता है। अब वही बालक जो जन्म के समय नितांत असहाय दशा में था, वह दूसरों की सहायता करने लगता है, मां-पिता की सेवा-सुश्रुषा करने लगता है। तथा देश का जिम्मेदार नागरिक वनता है।

अनेक अध्ययनों से यह तथ्य सामने आये हैं कि माता-पिता जिस तरह व्यवहार बालक के साथ करते हैं, बालक भी उन्हीं की तरह व्यवहार करना सीखता है। माता बालक की प्रथम शिक्षिका होती है और घर प्रथम पाठशाला। यहां वच्चा जो भी सीखता है उसका प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर पड़ता है। बालक अपने माता-पिता को देखकर ही सीखता है। वह उन्हीं से अच्छे गुणों को ग्रहण करता है ।

वर्तमान में, बालक-अभिभावक एवं सुदृढ़ पारिवारिक संबंधों में दरार आई है। अखबारों व पत्र-पत्रिकाओं में हम रोज पढ़ रहे है कि पैसे के लिए पुत्र ने पिता की जान ले ली। खेती के बंटवारें के लिए पुत्र

ने पिता को घायल किया। पिता ने भूमि विवाद को लेकर पुत्र को गोली मारी। पांच बेटों की मां ने पारिवारिक कलह से तंग आकर जान दे दी। शराबी पिता ने शराब के नशे में आकर पत्नी एवं पुत्री की जान ले ली। किशोरी घर से गहने-पैसे लेकर प्रेमी के संग भाग गयी। जमीन विवाद को लेकर भाई ने भाई की जान ली आदि-आदि। अतः स्पष्ट है कि अभिभावक संबंधों में मधुरता घट रही है, स्थिरता का ह्रास हो रहा है। तथा परिवर्तनशीलता बढ़ रही हैं उनमें आपस में समायोजन बिगड़ रहा है। इसका प्रमुख कारण माता-पिता की अभिवृतियां, बाल-पोषण की विधियां, प्रभुसत्तात्मक परिवार, अहम् की भावना, अधिकारवादिता आदि जिम्मेदार है। जब माता-पिता अपने बालकों को लाड़-प्यार से पालते हैं, पूरा स्नेह व संरक्षण देते हैं, आवश्यकता की सभी चीजें समय पर उपलब्ध करवातें हैं, तो बालक-अभिभावक संबंध मधुर होता है। परन्तु यदि माता-पिता अपने बालकों को उपेक्षा की दृष्टि से देखते है, बात-बात पर उपेक्षा करते है, उनका तिरस्कार करते हैं, छोटी-छोटी गल्तियों के लिए कठोर सजा देते हैं तो बालक का भावनात्मक संतुलन बिगड़ जाता है। प्रारंभ में बालक की यह कटुता छोटे-मोटे झगड़ों के रूप में दृष्टिगत होती है, जो बाद में चलकर एक गहरी खाई का रूप धारण कर लेती है जिसे भरना मुश्किल होता है। अतः बालक के कोमल मन को ठेस न पहुचांते हुये उसकी गल्तियों को सुधारने का प्रयास करें। उनमें सकारात्मक सोच उत्पन्न करें। उन्हें पूरा लाड़-प्यार दें तथा तनाव उत्पन्न करने वाले कारणों का पता करके उस पर अंकुश लगायें। पूरा प्रयास करें कि बालक अभिभावक संबंध कमजोर न हों।

बालक अभिभावक संबंधों पर लगातार अनुसंधान कार्य जारी है प्राप्त अध्ययनों से बहुत से कारणों का पता चलता हैं जो बालक अभिभावक संबंधो को प्रभावित करते हैं उसमें कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार हैं।

- अभिभावकों की अभिवृत्तियां :- माता-पिता एवं परिवार के सदस्यों की अभिवृत्तियां बालक-अभिभावक संबंधों को प्रभावित करती है। एस क्लेवन ने अपने अध्ययनों में यह देखा कि ''कम आयु वाले माता-पिता अपने बालकों के साथ उतना अच्छा व्यवहार नहीं कर पाते हैं और न ही उतने सुंदर ढंग से जिम्मेदारियों का वहन ही कर पाते हैं जितना कि अधिक आयु वाले माता-पिता करते हैं।'' इसका सबसे बड़ा कारण है यह है कि कम उम्र के माता-पिता अपने नवीन जिम्मेदारियों के प्रति उतने जागरूक नहीं होते हैं। माता-पिता अपने बालकों के पालन पोषण हेतु अलग-अलग प्रकार की अभिवृत्तियां अपनाते हैं, जैसे - अति संरक्षण देने वाले माता-पिता, अति कठोर माता-पिता, पक्षपात करने वाले माता-पिता, तिरस्कार करने वाले माता-पिता, प्रजातांत्रिक तरीके से पालने वाले माता-पिता, प्रभुत्वशाली माता-पिता, आदि इन सबका प्रभाव बालक-अभिभावक संबंधो पर पड़ता है।
- वाल पोषण विधियां :- माता-पिता अपने वालकों के लालन-पालन में किन विधियों का प्रयोग करते हैं, इस वात पर भी वालक अभिभावक संवंध निर्भर करता है। अच्छे लालन पालन से वालकों का चरित्र सुंदर होता है। उसमें मानवीय गुणों का सुंदर ढंग से विकास होता है। वहीं अधिक प्रभुत्वशाली, अधिक कठोर वातावरण में पलने वाले या अधिक स्वतंत्र वातावरण में पलने वाले बालकों में कई विशिष्ट लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। परिणामस्वरूप वालक-अभिभावक संबंध बिगड़ जाते है।

- परिवार का आकार व संरचना :- बड़े परिवार में पलने-बढ़ने वाले बालकों को न तो बहुत अधिक प्यार-दुलार ही मिलता है और न ही इनके लालन-पालन पर ही बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है। छोटे एवं एकाकी परिवार में पलने-बढ़ने वाले बालकों का अपने माता-पिता के साथ मधुर, संबंध होता है क्योंकि इन परिवारों में बालकों की आवश्यकताओं एवं लालन-पालन पर अधिक ध्यान दिया जाता है। परिवार की संरचना भी बालक-अभिभावक संबंधों को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करते हैं। जिन परिवारों में बच्चों की संख्या 8-9 या उससे भी अधिक होती है, वहां बालकों पर पूरा-पूरा ध्यान नहीं दिया जाता है। क्योंकि माता-पिता का प्यार अधिक बच्चों में बंट जाता है। यदि माता-पिता किसी एक बालक को अधिक सुविधा दे देते हैं तो उनमें मनमुटाव होने की संभावना बढ़ जाती है। उन सभी बालकों पर नियंत्रण करना भी कठिन होता है। बड़े बच्चों को अधिक जिम्मेदारी वहन करना होता है।
- परिवार का सामाजिक-आर्थिक ढांचा :- बालक-अभिभावक संबंधों को प्रभावित करने वाला एक अति महत्वपूर्ण व प्रमुख कारक है - परिवार का सामाजिक आर्थिक स्तर, इसमें बच्चों के परवरिश पर गहरा प्रभाव पड़ता है पैसों की तंगी व पैसों की अधिकता दोनों ही बालक अभिभावक संबंधों को कमजोर करते है। प्रायः मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवार में माता-पिता अपने बालकों से बहुत अधिक अपेक्षाएं रखते हैं तथा हर समय उन्हें यह सलाह व प्रशिक्षण देते हैं कि उन्हें ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जो सामाजिक नियमों, परम्पराओं, मूल्यों व संस्कृति के विपरीत हो। यह शिक्षा निश्चित ही बालक अभिभावक संबंधो को सुदृढ बनाती हैं।
- माता-पिता के आपसी संबंध :- बालक अभिभावक संबंधों को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है-''माता-पिता के आपसी संबंध''। जिन परिवारों में सामजस्य होता है माता-पिता दोनो एक दूसरें का मान-सम्मान करते हैं। परिवार का वातावरण शांत, मधुर एवं खुशहाल रहता है, वहां बालक-अभिभावक संबंध मधुर बना रहता है। ठीक विपरीत जिन परिवारों में माता-पिता आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं, परिवार का आंतरिक वातावरण कलह-पूर्ण होता हैं। इन परिवारों में बालक-अभिभावक संबंध मधुर नहीं रह पाते हैं।
- बालकों की संवेगात्मक परिपक्वता :- बालक अभिभावक संबंधों को प्रभावित करने वाले कारकों में से बालकों की संवेगात्मक परिपक्वता भी एक अति महत्वपूर्ण कारक है। जो बालक संवेगात्मक रूप से अधिक स्थिर एवं परिपक्व होते हैं उनका अपने माता-पिता के साथ मधुर संबंध होता है क्योंकि वे जल्दी क्रोधित नहीं होते हैं और न ही छोटी-छोटी बातों का उन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। परन्तु जो बालक संवेगात्मक रूप से अस्थिर होते हैं वे शीघ्र ही कोधित हो जाते हैं। बात-बात पर रूठ जाते हैं। वे हठी, जिद्दी, आक्रामक एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाले होते हैं। परिणामतः उनके अपने माता-पिता के साथ मधुर संबंध स्थापित नहीं हो पाता है।
- अन्तर पीढ़ी संघर्ष :- बालक- अभिभावक संबंधों को निर्धारित करने वाले कारक प्रमुख हैं- बालक और अभिभावक तथा इन्ही दोनों के इर्द-गिर्द ही सभी कारक घूमते रहते हैं। यदि इन दोनों (बालक व अभिभावक) के सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों, नियमों, परम्पराओं, प्रथाओं, आदर्शो आदि में

बहुत अधिक अंतर होता तो बालक - अभिभावक सम्बन्धों में कटुता आ जाती है। किशोर बालकों को माता - पिता से इस बात की शिकायत रहती है कि वे उसे समझने का प्रयास नहीं करते हैं वहीं अभिभावकों का ऐसा मानना है कि किशोरवय के बालक-बालिकायें उनकी बातों को नहीं मानते हैं। अवज्ञाकारी हो गये हैं तथा वही करते हैं जो उनके मन में आता है। यह एक अमूर्त संघर्ष होता है जो युवा पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच मूल्य परिवर्तन या हितों के टकराव के कारण होता है।

अब प्रश्न यह है कि वे कौन से कारण है जिससे बालक व अभिभावक संबंध मधुर व सौहाद्रपूर्ण नहीं हो पाते आज के भाग-दौड़ वाली जिन्दगी में, बालक-अभिभावक संबंधों में निरंतर ह्रास होने लगा है। इनके बीच रिश्तों की खाई गहरी होने लगी है। सम्बन्धों में खटास आने लगा है वैसे तो बालक-अभिभावक सम्बन्ध मधुर न होने के अनेक कारण हैं। परन्तु यदि मनोवैज्ञानिक अध्ययन किये जाएं तो स्पष्ट ज्ञात होता है कि जब माता-पिता अपने व्यवहारों व आचरणों से बाल मन को ठेस पहुंचाते हैं, उनका लालन-पालन ठीक ढंग से नहीं करते हैं, समय पर उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करते हैं तब उनके मन में अपने माता-पिता के प्रति घृणा एवं क्रोध के भाव उपजने लगते हैं। निम्न कुछ कारणों से हम बालक अभिभावक संबंधों में निरन्तर आ रही दूरियों को समझने का प्रयास कर सकते हैं।

- बालकों का तिरस्कार व उपेक्षा करना।
- अभिभावक द्वारा बालकों के पालन-पोषण में लापरवाही बरता जाना।
- अभिभावक का बहुत अधिक कठोर होना तथा अपने बालकों के प्रत्येक कियाविधि पर अनावश्यक हस्तक्षेप करना।
- बालकों के लालन-पालन में प्रभुत्वशाली विधि अपनाना।
- बालक को पौष्टिक व संतुलित भोजन उपलब्ध न कराना।
- बालकों एवं अभिभावकों के बीच सांस्कृतिक मूल्यों, परम्पराओं, आदर्शों, सामाजिक नियमों आदि में बहुत अधिक भिन्नता होना।
- माता-पिता का अशिक्षित होना।
- बहुत बड़ा परिवार होना।
- सामाजिक आर्थिक स्थिति असमान होना।
- अभिभावक द्वारा अपने बालकों के साथ पक्षपातपूर्ण व्यवहार किया जाना।
- माता-पिता का आपसी संबंध मधुर नहीं होना।
- बालकों का बौद्धिक स्तर कम होना।
- बालक का स्वास्थ्य खराब होना।

हमारे समाज में बालक अभिभावक संबंधों में बढ़ती दूरिया अनेक समस्यायों में यह एक गंभीर समस्या है देश का हर सामाजिक अनुसंधान कर्ता इनके कारणों की खोज में लगा हुआ है। इस समस्या का समाधान कैसे हों समाज के सामने यह बहुत बड़ा प्रश्न है। निम्न कुछ निष्कर्ष सामने आयें हैं जिन पर अभिभावकों को ध्यान देना आवश्यक है।

- बालक को न तो बहुत अधिक लाड़-प्यार में पालें और न ही उनके पालन-पोषण में बहुत अधिक कठोर नियंत्रण व प्रभुत्वशाली विधि ही अपनायें।
- बालकों की आवश्यकताओं की पूर्ति समय पर करें। मगर ध्यान रखें। उनकी नाजायज मांगों की पूर्ति कदापि नहीं की जानी चाहिए।
- पारिवारिक वातावरण शांतिपूर्ण एवं प्रसन्नतादायी बनाये रखें।
- बालक को दूसरों के सामने अपमानित व तिरस्कृत नहीं करें और न ही जान- बूझकर उनकी उपेक्षा करें।
- बालक के द्वारा किये गये कार्य को प्रोत्साहित करें।
- बालक के संगी-साथियों पर नजर रखें।
- बालकों को पूर्ण पौष्टिक एवं संतुलित आहार उपलब्ध करायें।
- बालकों को स्वस्थ मनोरंजन के साधन उपलब्ध करायें।
- यदि बालक कोई अच्छा व प्रशंसनीय कार्य करता है तो उसकी प्रशंसा अवश्य करें।
- बालक की गल्तियों को कदापि नजर अंदाज नहीं करें गल्तियों के लिए कठोर दंड नहीं दें।
- माता-पिता को चाहिए कि वे अपने सभी बालकों के साथ समान व्यवहार अपनायें। वे अपने बालकों के साथ पक्षपात न करें।
- बालकों के स्वस्थ्य मनोरंजन का ख्याल रखें।
- बालक की शारीरिक व मानसिक क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए ही उन्हें कार्य भार सौंपें।
- बालक को अपनी रुचि के अनुसार ही पढ़ने व बढ़ने दें।
- बालकों की समस्याओं को समझने का प्रयास करें और उसके समाधान में अपना बहुमूल्य सुझाव व सहयोग दें।
- किशोरवय बालकों के साथ माता-पिता का व्यवहार एक दोस्त की तरह होना चाहिए।
- भूलकर भी बालक के कार्यो की निन्दा नहीं करें। उसे सही मार्गदर्शन दें।
- यदि माता-पिता बालकों को सुरक्षा व संरक्षण दें। उनकी भावनाओं को समझें तथा उसकें निदान में अपना अमूल्य सहयोग दें।

एक आदर्श परिवार का प्रमुख आधार पारस्परिक सौहाद्र एवं निस्वार्थ प्रेम होता है। प्रेम में संजीवनी शक्ति होती है, अनूठा गुण एवं विलक्षण क्षमता होती है जो परिवार के प्रत्येक सदस्य को अपने प्रेम की डोर से बांधे रखती है। प्रेममय पारिवारिक वातावरण में परिवार के सभी सदस्यों की शारीरिक, मानसिक एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। परिवार के सदस्य एक-दूसरे का ख्याल रखते हैं जिससे पारिवारिक ढांचा सुदृढ़ एवं मजबूत बनता है। आज के बदलते परिवेश में भागमभाग वाली जिन्दगी में, सामाजिक सम्बन्धों एवं पारिवारिक सम्बन्धों में कटुता आ रही है। सम्बन्धों की स्थिरता घट रही है। भारतीय युवा पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर रहे हैं। वे अपने माता-पिता को महत्व नहीं देते हैं वर्तमान में, पारिवारिक मूल्यों एवं आदर्शों में बदलाव आ रहा हैं। लोगों की सोच बदल रही हैं। अन्तरपीढ़ी संघर्ष निरन्तर जारी हैं।

अतः उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि पारिवारिक सम्बन्ध कमजोर होने के अनेक कारण हैं। परन्तु

ISSN 2395-051X

बालक और अभिभावक परिवार में ही रहते हैं इसलिये पारिवारिक संबंधो का सुदृढ़ होना आवश्यक है निम्न बातों पर अमल करके हम पारिवारिक वातावरण को सुखद, आनन्दमयी और खुशहाल बना सकते हैं -

- परिवार के सभी सदस्यों को आपस में मिल-जुलकर रहना चाहिए।
- एक-दूसरे की भावनाओं का आदर करना चाहिए।
- परिवार के सभी सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति समय पर की जानी चाहिए।
- पारिवारिक लक्ष्यों की पूर्ति हेतु सामूहिक रूप से प्रयास करना चाहिए।
- परिवार के सदस्यों की कमजोरियों को ध्यान में रखें। उनकी कमजोरियों का अनुचित लाभ नहीं उठायें।
- परिवार के सदस्यों को चाहिए कि वे एक-दूसरे की आलोचना नहीं करें।
- परिवार के मुखिया को चाहिए कि वे परिवार के सभी सदस्यों के साथ समान रूप से व्यवहार करें।
- परिवार के सदस्य को चाहिए वे आपस में मिल-जुलकर कार्य करें। आपसी मनमुटाव होने पर इसका निराकरण स्वयं करें। एक-दूसरे से ईर्ष्या का भाव नहीं रखें। सबके हित में कार्य करें।
- माता-पिता को भी अपने विचारों में थोड़ा परिवर्तन करना चाहिए तथा नयी पीढ़ी के साथ तालमेल बिठाने का प्रयास करना चाहिए।
- आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए कार्य करना चाहिए।

आज अन्तरपीढ़ी संघर्ष हर तरफ दिखाई देता है ऐसे में हमे सोचना होगा कि बालक समाज का अभिन्न अंग होता है। अभिभावकों को ऐसा वातावरण बनाना होगा जिससे बालक आत्मानुशासन की ओर प्रेरित हो। हमे परिवर्तन तथा परिवर्तित समाज को स्वीकारना अनिवार्य है। बालक को गलत कार्य को करने को प्रोत्साहन न दें जहां विनय विनम्रता प्रेम काम न करें और सुधार अनिवार्य हो वहां भय, दण्ड या कठोरता का सहारा लेना भी अनुचित नहीं है। यह दण्ड, औषधि व उत्प्रेरक तत्व का काम करें। प्राचीन समय से ही समाज में माता - पिता एवं बालकों के पारम्परिक संबंधों पर पर्याप्त चिंतन होता रहा है क्योंकि बालकों का विकास भावी समाज को प्रभावित करता है अभिभावकों और बालकों के संबंध जितने स्वस्थ होंगें समाज भी उतना ही प्रगतिशील होगा। समाज शास्त्रियों को इस संबंध में गहन चिंतन व अनुसंधान करना होगा जो, व्यक्ति समाज व देश को मजबूत बनाने में सहयोग प्रदान करेगा।

सन्दर्भ -

1. वोल्टन एस.आर., वर्किंग विथ, वाइलेंट फेमिली, सेज पब्लिकेशन, न्यूयार्क, 2022
2. खान तवस्सुम एवं नीलमा कुवंर, बच्चों के नैतिक विकास में माता - पिता की भूमिका, अकिनिक पब्लिकेशन, दिल्ली, 2019 (इन्टरनेशनल जरनल आफ होम साइंस में प्रकाशित आलेख)
3. वर्मा, नीना, यूथ इनवाल्मेंट इन क्राइम एण्ड वायलेंस, ग्लोवल विजन पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2013
4. शेखावत, श्रीमति समता, किशोरावस्था, सोनू पब्लिकेशन, जयपुर, 2010
5. सिंह, डॉ. वृन्दा, बाल अपराध, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2010
6. ठाकुर ए.पी., इण्डियन सोसायटी, ग्लोवल विजन पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, 2010
7. आहूजा राम, सामाजिक समस्यायें, रावत पब्लिकेशन जयपुर, 2006